श्री शिवकृपानंद स्वामी

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

ॐ

[महाशिवरात्री 2018 पर विषेष संन्देश]

समाधी

13-2-2018

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - - -

आप लोग सदैव प्रश्न पुछते रहते हो की स्वामीजी हम तो इतने भाग्यशाली है। की हमे आपका सानिध्य हमारे जिवनकाल मे प्राप्त हुआ। लेकीन हमे "चिंन्ता" है। भवीष्य की क्योकी आने वाला समय ठीक नही है, "चित्त" को पवीत्र और शुद्ध रखना सशक्त रखना दिन प्रती दिन कठीण होते जायेगाँ और आप कहते हो की "जिवन्त गुरु" के बीना "आत्मसाक्षात्कार" संभव ही नही है, तो आपके ही "समाधीस्थ" होने के बाद क्या होगा। आने वाली पिढीयो का क्या होगा ? थोडा विस्तार से बताकर हमारी इस समस्या का समाधान किजीये क्योकी हमे हमारी "अगली पिढी" की चिंन्ता है।

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

आप केवल अपना ही नही सोचते आने वाली पिढ़ीयो के बारे मे भी सोचते हो यह भी "आध्यात्मीक प्रगती" का ही परीणाम है,

जिस मनुष्य ने "जन्म" लीया उसकी "मृत्यु" निश्चीत है। हम जिन्हे "देवता" मानते है, या "सद्गुरु" मानते है। उनकी भी "मृत्यु" हुयी है। याने "मृत्यु" एक "सत्य" है, इसलीये मृत्यु से डरो मत लेकीन मृत्यु को भुलो भी मत आप रोज सुबह सोचो की यह मेरे जिवन का "अंन्तीम दिन" है, तो आपके कर्म ही बदल जायेगे आप प्रयोग करके "अनुभव" लो "आध्यात्मीक ज्ञान" पाना एक प्रकार का कर्ज है, जब तक आप वह बांटते नही आपकी "मुकती" संभव नही है, हिमालय मे मेरे गुरुओने "आध्यात्मीक ज्ञान" तो प्राप्त कर लीया पर बांटने के लीये उनके पास भी कोई भी नही था। वे समाज मे आ नही सकते थे और समाज उन तक जा नही सकता था इस लीये-आत्मज्ञान बांटने के लिये उन्होने मेरे "शरीर" को ही "माध्यम" बनाया और "माध्यम" के रुप मे "अधीकृत" कीया कयोकी उनके पास इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नही था कयोकी आत्मज्ञान की धरोहर कीसी को सौंपे-बीना उन्हे भी "मुकती" संभव नही थी।

|| जय बाबा स्वामी ||

श्री शिवकृपानंद स्वामी

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| वसुधैव कुटुंबकम् ||

आप स्वंयम ही सोचो न एक शरीर से इतना चैतन्य का प्रभाव कैसे अनुभव हो सकता है. वास्तव मे इसमे इस शरीर का "अपना" कुछ भी नही है, शरीर तो केवल एक "पाईप" के समान ही है, कई सदगुरुओ के आर्शिवाद एक शरीर से प्राप्त हो रहे है।

आपको आसान शब्दो मे समझाता हु, कीसी कंपनी का "मैनेजर" या "एजन्ट" तो एक सामान्य ही मनुष्य दिखता है, पर वह सामान्य नही होता उसके पिछे एक बहुत बडी कंपनी खडी रहती है, एक बडी कंपनी की शक्तीया, समर्थन, उस एक व्यक्ती को रहता है, बस समझ लो यहाँ भी ऐसा ही कुछ है, यह शरीर वैसे तो सामान्यसा ही है, पर असामान्य हिमालय के तपस्वीयो की मुनीयो की कैवल्य कुंभक योगीयो की एक बडी सामुहीकता इस शरीर के साथ-प्रत्येक क्षण होती ही है। "श्री शिवकृपानंद स्वामी" कीसी एक व्यक्ती का नाम नही है, उन सदगुरुओ की सामुहीकता का-नाम है। इसी लीये इस नाम मे ही चैतन्य का-प्रवाह आपको महसुस होता है, इसका कारण यही है, एक बडी सामुहीक शक्ती का- यह नाम- "प्रतिनीधी" है, यह "सत्य" है।

Scanned by CamScanner

श्री शिवकृपानंद स्वामी
'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org
।। वसुधैव कुटुंबकम्।।

यह नाम या यह शरीर एक प्रकार का पुल है, "भुतकाल" और "भवीष्यकाल" के बीच का क्योकी यह शरीर वर्तमान काल मे है,

भुतकाल मे हुये 800 साल के सदगुरुओ का और भवीष्यकाल मे आने वाली 800 साल तक की आत्माओ का यह प्रकार का "चक्र" है, इसके बीच की कडी यह वर्तमान काल है, इस शरिर को त्यागने के बाद "समाधी स्थल" से सुक्ष्मरुप से शक्तीया कार्यरत हो जायेगी और अगले 800 सालो तक आनेवाली आत्माओ को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होगा यह संन्देश आने वाली पिढ़ीयो के लीये है, "समाधीस्थल" से सुक्ष्मशक्तीया श्री मंगलमुर्तीयो को प्राप्त होते रहेगी और श्री मंगलमुर्तीयो के "माध्यम" से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होगा ऐसा आजतक नही हुआ है, पर अब होगा यह आध्यात्मीक क्षेत्र का नया "अवीष्कार" है, कल इन मंगल मुर्तीयो पर "संशोधन" होगा की निर्जीव मुर्तीया संजीव "अनुभुती" कैसे करा पाती है, वह इस लीये करा सकेगी क्योकी इनकी "प्राणप्रतीष्ठा" ही इसी कार्य के लीये की गयी है, केवल अंन्तर यह होगा की अभी गुरुशक्तीया-साधक को पकडकर संभाल कर रखती है, पर बाद मे-साधक को स्वंयम गुरुशक्तीयो को पकड कर रखना होगा, अभी "बील्ली" और "बील्ली के बच्चे" जैसी स्थिती है,

भविष्य "बंदरीया" और "बंदरीया के बच्चे" जैसी स्थीती होगी। इस प्रकार का प्रयोग विश्व के आध्यात्मीक क्षेत्र मे प्रथम ही होने वाला है,
हिमालय के इतने सारे गुरुओ के आर्शीवाद का गुरुकार्य लेकर आया हु की जीसके लीये यह जिवन तो बहुत "छोटा" है, और यह विश्वस्तर का कार्य है, समुचे "मानव समाज" का कार्य है, विश्व मे जब भी मानव की आध्यात्मीक प्यास लगेगी वह दौडा² यहाँ आयेगा। अभी तो लाखो आत्माये आनेवाली है, इसी लीये विश्व के कोने कोने मे "श्री गुरुशक्तीधाम" की स्थापना की जा रही है, इस वर्ष "सिंगापुर" के आश्रम के लिये श्री मंगलमुर्ती की प्राणप्रतीष्ठा की जा रही है, परमात्मा एक ही है, और वह सभी मे विधमान है, लेकीन जब तक हम अंन्तरमुखी नही होते हमे उसका अनुभव नही होता है, यह सभी श्री मंगलमुर्तीयो के सानीध्य मे जो भी आयेगा वह एक अंन्तरमुखी अवस्था को प्राप्त कर आत्मसाक्षात्कार पा सकता है, प्रत्येक मनुष्य मे परमात्मा संपुर्ण रुप से ही विधमान होता है, जो भी मनुष्य खाली हो जाता है, निखालस हो जाता है, उसे उसमे "संपुर्ण परमात्मा" के दर्शन हो जाते है, परमात्मा कभी भी "अंशो" मे नही होता परमात्मा को कोई खंडीत नही कर सकता है, जब "सुर्य" एक है, सुर्य कभी अंश मे नही होता तो

श्री शिवकृपानंद स्वामी
'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| वसुधैव कुटुंबकम् ||

परमात्मा का "अंश" कैसे हो सकता है, माध्यम का शरीर नाशवान है, माध्यम के जिवनकाल मे ही आप सुक्ष्म शरीर से अपना संमन्ध स्थापीत कर लो यही सही समय है,
तुम तो अपने घर जल्दी जा सकते हो क्योकी तुम तो अकेले हो "माध्यम" तो लाखो आत्माओ के साथ "वचन" से बंन्धा है. उसे तो अगले 800 साल अभी इंतजार करना है, इस लीये तुम लोग तो अपनी ही "चिंन्ता" करो "आनेवाली पिढीयो" के लीये हिमालय के गुरुशक्तीयो ने व्यवस्था कर के रखी है, स्थुल शरीर सदैव एक सीमा मे ही बंन्धा रहता है, लेकीन सुक्ष्म शरीर के साथ ऐसा नही है. उसकी कोई सीमा नही होती है, सुक्ष्मशरीर का क्षेत्र विशाल होता है, इसी लीये मेरे गुरुदेव ने कहा था - तुम्हारे माध्यम से गुरुकार्य का विस्तार तुम्हारे जिवन काल के बाद सुक्ष्मरुप से ही होगा। दुसरा सद्गुरु उसके जिवनकाल मे शरीर से भले ही पास मे हो पर साधक की आत्मासे दुर ही रहता है. क्योकी सद्गुरु और साधक मे एक दिवार के रुप मे उसके माया का शरीर खडा रहता है, वह साधक को सदैव भ्रमीत करता है, पर जब सद्गुरु का शरीर छुट जाता है. तो वह माया की

श्री शिवकृपानंद स्वामी

॥ जय बाबा स्वामी ॥

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ वसुधैव कुटुंबकम् ॥

दिवार गीर जाती है. और फीर साधक की आत्मा का संमन्ध सदगुरु के सुक्ष्म शरीर के साथ सीधा हो जाता है. साधक अपने सदगुरु और निकट से ही अनुभव करने लगता है, यह मेरा निजी अनुभव है, जब "मै" सदगुरु के निकट रहा तब उन्हे "मै" जान नही पाया जब की आज वे नही है, तो उनका सुक्ष्मशरीर अभी तो सदैव आत्मा के साथ ही रहता है, कीसी क्षण भी ऐसा नही लगता की वे नही है, क्योंकी उन्होने शरीर का त्याग कर दिया तो मायारूपी शरीर की दिवार ही गीर गयी है, और मेरा "मै" गिर गया उनके साथ था तो मेरा "मै" विधमान था,

मेरे गुरुदेव मे मुझे "संपुर्ण परमात्मा" की अनुभुती हुयी और मेरी परमात्मा की खोज ही समाप्त हो गयी इसी लीये कहता हु की मनुष्य मे परमात्मा का अंश नही संपुर्ण परमात्मा ही होता है, क्योंकी परमात्मा कभी भी अंशो मे खंडीत नही हो सकता है, वह "अखंड" है, "अविनाशी" है, वह कल भी था आज भी है, और कल भी रहेगाँ बस हमे आज मे होने की आवश्यकता है,

Scanned by CamScanner

श्री शिवकृपानंद स्वामी
'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

आपको अन्त: मे इतना ही कहना चाहता हु, की आप आनेवाली पिढीयो की चिंता मत करो क्योकी आने वाले समय मे कई हिमालय के गुरु जन्म ले चुके होगे, और आज भी ले चुके है, अभी बच्चे है, समय के साथ उनका भी कार्य प्रांरभ होगा और अपने देश का भवीष्य बहुत उज्वल है।
आप तो आज वर्तमान मे रहो और अपनी चिंता करो एक एक दिन आपके हाथ से फिसल रहा है। अपना स्वंयम ही निरीक्षण करो की प्रत्येक वर्ष "मै" कितना "मुक्त" हो रहा हु, "मुक्ती" एक लक्ष्य है, उस और प्रत्येक दिन आपको आगे बढना है, "मुक्त अवस्था" एक ही दिन मे प्राप्त नही होती है। उस स्थिती को पाने के लिये आपको अपने एक एक "झमेले" कम करते रहना होगा, आप तो रोज ही नये नये झमेले खडे कर रहे हो। संपुर्ण समर्पीत होने की आवश्यकता है, प्रथम समर्पण "तन" का होना चाहीये "तन" के समर्पण से मेरा आशय जो भी शरीर को सुवीधाए प्राप्त हो रही है, उसमे रुकब रहो सभी स्थानो पर गुरुसानीध्य का अनुभव करो शरीर को "आलसी" मत बनाओ।

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

आप का ध्यान लगो या न लगो 30 मीनीट शरीर को स्थिर बैठने की आदत डालो ध्यान तो छोडो आप तो 30 मीनीट "स्थिर" भी नही बैठ पाते हो।
दुसरा समर्पण है, "मन" का समर्पण "मन" के समर्पण से मेरा आशय "मन" से सदैव गुरुदेव का स्मरण करो और गुरुदेव मेरे साथ है, मेरा कभी कुछ बुरा हो नही सकता है, यह भाव रखो और कोई भी नकारात्मक विचार मत करो दुसरा "मन" मे भूतकाल के और भवीष्यकाल के विचार मत करो किसी का भी बुरा मत सोचो सभी का कल्याण हो यह भाव ही "मन" मे रखो
तिसरा है, "धन" का समर्पण "धन" के समर्पण से मेरा आशय "धन" के समाधान से गुरुदेव की कृपा मे जो भी "धन" मीला उसे प्रसाद समझ कर ग्रहण करो "धन" के पिछे मत दौडो "धन" का दान करो "दान" मोक्ष का द्वार है, बस वह दान केवल दान हो दान कीसी भी प्रकार का इनवेस्टमेन्ट नही होना चाहीये याने मै 100 रु दान दुंगा तो परमात्मा मुझे 1 लाख देगा यह भाव से दान मत करो कीसी भी "अपेक्षा" के साथ दान मत करो। मैंने दान किया यह दिखाकर दान मत करो अन्यथा यह आपके "कर्म"

श्री शिवकृपानंद स्वामी

॥ जय बाबा स्वामी ॥

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ वसुधैव कुटुंबकम् ॥

खाते मे पुण्यकर्मों के रूप मे जमा हो जायेगा और
वह पुण्यकर्म भोगने आपको फीर नया जन्म लेना
होगा. इसी लीये "गुप्तदान" को महत्व दिया गया है,
दान हमे केवल हमारी जिवनभर पाने की आदत
को "ब्रेक" देने के लीये ही देना चाहीये,
अब जो मनुष्य जिवनभर पाने की ही दौड मे लगा
हो वह एकदम तो देने की दिशा मे दौड नही सकता
"दान" केवल पाने की दौड पर एक ब्रेकसा है, "मुक्ती"
भी पाना नही है, हमारी आत्मा तो मुक्त ही है,
शरीर ने जो झमेले बान्धकर रखे है, हमे उनसे
"मुक्त" होना है, आप सभी अपने जिवन मे उस "मुक्त
अवस्था" तक पहुचे जिस अवस्था मे पाने के लिये
जिवन मे कुछ भी नही रहता है, यही परमात्मा से
"प्रार्थना" है, आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका अपना
बाबा स्वामी
13/2/2018